28 अगस्त, 2018 को हिंदी विभाग, कॉलेज ऑफ़ वोकेशनल स्टडीज़ (दिल्ली विश्वविद्यालय) ने ' साहित्य : भाषा, समाज और पाठक' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। इस गोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में हिंदी के जाने-माने पत्रकार एवं साहित्यकार प्रियदर्शन और हिन्दू कॉलेज में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ रामेश्वर राय ने भाग लिया।

कार्यक्रम का स्वागत वक्तव्य हिंदी विभाग की प्रभारी डॉ रत्नावली कौशिक ने दिया। उन्होंने कहा कि साहित्य समाज का दर्पण भर नहीं हैं, बल्कि दर्पण के साथ-साथ दीपक भी होता है। साहित्य भाषा के माध्यम से पाठक को एक संवेदनशील मनुष्य बनाने का काम करता है। इसीलिए साहित्य का पठन-पाठन अत्यंत आवश्यक है।

प्रो. रामेश्वर राय ने कहा कि साहित्य अपरिभाषित है। जैसे, बोतल में नदी नहीं समा सकती। साहित्य को परिभाषित करने से पूर्व मनुष्य को परिभाषित करना पड़ेगा। साहित्य मनुष्य की भावनाओं, संवेदनाओं, चिंताओं व विचारों से पैदा होता है। उन्होंने कहा कि साहित्य जीवन का आकाश हैं जिसके केंद्र में विचार और चिंतन होते हैं। इसके लिए एक भाषा की आवश्यकता होती है जिसमें मनुष्य के विचारों और भावनाओं की सहज और सरल अभिव्यक्ति हो। उन्होंने साहित्य और समाज के संबंधों पर सवाल उठाते हुए कहा कि साहित्य का संबंध राजनीति से ज्यादा है। साहित्य से केवल मनुष्य की संवेदना का परिष्कार होता है जबकि राजनीति से समाज में व्यापक परिवर्तन होता है।

प्रियदर्शन ने कहा कि साहित्य जीवन की आंख होता है। यह जीवन की जटिलताओं को गहराई से उकेरता है। कभी कभी यह मौन रहकर करता है। यह साहित्य की एक भाषा है क्योंकि मौन भी एक अभिव्यंजना है। उन्होंने कहा कि भाषा केवल अर्थो से नहीं बल्कि छवियों से, जीवन की समझ या स्मृति से भी आती है। भाषा लेखन की ज़रूरत से पैदा होती है। इसलिए भाषा और साहित्य के साथ पाठक वर्ग का अटूट रिश्ता है।

कार्यक्रम का संचालन डॉ हरजेंद्र चौधरी ने किया।

प्रस्तुति : डॉ. उपेन्द्र कुमार सत्यार्थी